

**समाप्त वि.** (तत्.) 1. पूरा किया हुआ, पूर्ण हो जाना, खत्म 2. मृत 3. उपभोग होने से जिसका अस्तित्व न रहे 4. जिसका कार्य काल पूरा हो चुका हो।

**समाप्त सैन्य पुं.** (तत्.) एक ही ढंग से लड़ने वाली सेना।

**समाप्ति स्त्री.** (तत्.) 1. अंत, पूर्ण होना, पूर्ति, अवसान 2. विवाद का अंत करना 3. अंतर दूर करना 4. शेष न रहना 5. निपटारा 6. अवधि, सीमा आदि का अंत होना।

**समाप्तिक वि.** (तत्.) अंतिम जिसने कोई काम पूरा कर लिया हो पुं. समाप्त करने वाला। वेदाध्ययन समाप्त करने वाला युवक।

**समाप्य वि.** (तत्.) पूर्ण करने योग्य, अंत करने योग्य।

**समामेलन पुं.** (तत्.) अनेक वस्तुओं को परस्पर मिला देना, दो या अधिक कंपनियों का परस्पर विलय।

**सामान्ना पुं.** (तत्.) 1. शास्त्र 2. समष्टि, समूह।

**सामान्नात वि.** (तत्.) बार-बार कहा हुआ जो परंपरा के रूप में चली आती हो, वर्णित पुं. वर्णन, कथन।

**सामान्नाय पुं.** (तत्.) 1. परंपरागत वचनों आदि का संग्रह 2. परंपरा से प्राप्त होना 3. शास्त्र 4. समूह, संग्रह 5. शिव 6. प्रलय 7. संहार।

**सामान्नायिक पुं.** (तत्.) 1. शास्त्रज्ञ, शास्त्रों का ज्ञाता, शास्त्रवेत्ता 2. शास्त्र संबंधी, शास्त्रीय।

**समायत वि.** (तत्.) बढ़ा या फैला हुआ, विस्तृत, विशाल।

**समायुक्त वि.** (तत्.) 1. जोड़ा हुआ 2. तैयार किया हुआ 3. नियुक्त 4. संपर्क में लाया हुआ 5. दत्तचित्त।

**समायुक्तक पुं.** (तत्.) समायोजन करने वाला, जोड़ने वाला।

**समायुत वि.** (तत्.) एकत्र किया हुआ, संयुक्त किया हुआ संगृहीत, जोड़ा हुआ या लगाया हुआ।

**समायोग पुं.** (तत्.) संयोग, युक्त करना, जन-समूह, भीड़, राशि संबंध तैयारी (धनुष से) निशाना ठीक करना।

**समायोजक पुं.** (तत्.) समायोजन करने वाला।

**समायोजन पुं.** (तत्.) समंवर्य, समायोग, सामंजस्य (जीव.) पर्यावरण से सामंजस्य बनाए रखने की प्रक्रिया।

**समारंभ पुं.** (तत्.) 1. आरंभ, प्रारंभ, शुरूआत 2. साहसिक कार्य 3. समारोह 4. अंगराग, लेप।

**समारंभण पुं.** (तत्.) 1. कार्य आरम्भ करना, ग्रहण करना 2. आलिंगन, गले लगाना 3. अंगराग लगाना, लेप लगाना।

**समारब्ध वि.** (तत्.) आरंभ किया हुआ, घटित जिसने कार्य का आरंभ किया है।

**समारंभ्य वि.** (तत्.) जिसका समारंभ हो सकता हो या होने को हो, आरंभ के योग्य।

**समाराधन पुं.** (तत्.) 1. प्रसन्न करना, संतुष्ट करना 2. सेवा, परिचर्या 3. उत्तम आराधन, सम्यक् प्रकार से आराधन, पूजन।

**समारूढ वि.** (तत्.) 1. आरूढ़, सवार, किसी वाहन आदि पर बैठा हुआ 2. अंगीकृत, स्वीकार किया गया 3. घाव जो भर गया हो।

**समारोप पुं.** (तत्.) 1. आरोप अथवा दोष लगाने की क्रिया या भाव 2. स्थानांतरण।

**समारोह पुं.** (तत्.) 1. किसी वाहन के ऊपर-चढ़ने की क्रिया, सवारी 2. धूमधाम से किया जाने वाला शुभ आयोजन।

**समारोहण पुं.** (तत्.) 1. चढ़ने अथवा सवार होने की क्रिया, सवार होना 2. यज्ञाग्नि का स्थान-परिवर्तन करना।

**समार्थ पुं.** (तत्.) 1. समान अर्थ वि. 2. समान अर्थ वाला, पर्यायवाची शब्द।